मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 18, अंक 3 मार्च 2013

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

कटक में एनबीटी पुस्तक मेला 2
विजयवाड़ा में बाल-सृजनात्मकता का प्रोन्नयन 2
आंध्र प्रदेश में तीन कार्यक्रम
हैदराबाद : तेलुगू पुस्तकों का लोकार्पण समारोह 3
भुवनगिरि, नालगोंडा : पुस्तक लोकार्पण 3
राजामूंद्री पुस्तक मेला : पुस्तकों का लोकार्पण 3
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नवीनतम प्रकाशन 4
नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 : छायाचित्र वीथिका 5
पुस्तक समीक्षा 6
ट्रस्ट की पुस्तक 'औषधीय पौधे' की विज्ञान प्रगति में प्रकाशित समीक्षा 7
तमिल लेखक का ट्रस्ट-मुख्यालय में सम्मान 7
ट्रस्टकर्मी सेवानिवृत्त 7
शुभकामना संदेश 7
चिट्ठीघर 8

उत्तर प्रदेश (ग्रामीण) पुस्तक परिक्रमा

बरेली	15 - 17 मार्च, 2013
बिजनौर	18 - 20 मार्च, 2013
मुजफ्फरनगर	21 - 23 मार्च, 2013

बिहार (ग्रामीण) पुस्तक परिक्रमा

हाजीपुर	15 - 17 मार्च, 2013
भोजपुर	18 - 20 मार्च, 2013
बक्सर	21 - 24 मार्च, 2013

आयोजक : नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

रुको, ठहरो, पुस्तक परिक्रमा में आओ
किताबों से मिल लो
बातें कर लो
कुछ किताब संग ले
घर की राह पकड़ लो।

येरूसलेम अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

येरूसलेम अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला इस वर्ष 50 वर्ष का हो गया। 10 से 15 फरवरी, 2013 के दौरान इजराइल की राजधानी येरूसलेम में अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले के इस 26वें संस्करण का आयोजन कन्वेंशन सेंटर, येरूसलेम में हुआ, जिसने अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन बिरादरी को प्रकाशन के क्षेत्र में अनेक अवसर उपलब्ध कराए। लगभग 150 भागीदारों के साथ अपेक्षाकृत छोटा पुस्तक मेला होने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय भागीदारी के लिहाज से यह बेहद महत्वपूर्ण आयोजन रहा। पुस्तक मेले में फ्रेंच, जर्मन, रूसी, हिस्पानी, पोलिश, आस्ट्रियाई, पोर्तुगीज, ब्राजीली, अंगोलन एवं इथियोपियाई आदि प्रकाशकों की यहाँ प्रभावशाली उपस्थिति रही। आयोजक देश इजराइल के प्रकाशनों की भी सशक्त उपस्थिति देखी गई।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा लगाए गए भारतीय स्टॉल ने विभिन्न प्रकाशकों, पुस्तकप्रेमियों एवं आगंतुकों को काफी आकर्षित किया। परंपरागत औषधियों, भारतीय अध्यात्म, बुद्ध, भारतीय परंपरागत ज्ञान, यात्रा आदि पर भारतीय पुस्तकों के प्रति इजराइलियों का आकर्षण आश्चर्यजनक था। भारतीय पुस्तकों के प्रति इजराइलियों का गहरा लगाव परिलक्षित हुआ।

विदित हो कि पुस्तक मेले का उद्घाटन इजराइल के राष्ट्रपति श्री शिमोन पेरेज की उपस्थिति में येरूसलेम के मेयर नीर बरकत ने किया। उद्घाटन सत्र में इस वर्ष के 'येरूसलेम पुरस्कार' प्राप्त हिस्पानी लेखक श्री अंतोनियो मुनॉज मॉलिना मुख्य वक्ता थे। विदित हो कि 'येरूसलेम पुरस्कार' येरूसलेम अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले का एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट साहित्यिक-सांस्कृतिक परिघटना के रूप में देखा-जाना-समझा जाता है। येरूसलेम अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला पूरे विश्व के संपादकों और साहित्यिक अभिकर्ताओं के लिए फेलोशिप भी प्रदान करता है।

कटक में एनबीटी पुस्तक मेला

15 से 23 दिसंबर, 2012 तक कटक के बलियात्रा ग्राउंड में कटक जिला प्रशासन तथा ओडिशा प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने एक नौ दिवसीय पुस्तक मेला आयोजित किया। मेले का उद्घाटन करते हुए अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवि, डॉ. जयंत महापात्र ने कहा, ''पुस्तकें हमारा वर्तमान हैं, ये हमारे अतीत की रक्षा करती हैं तथा हमें एक उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाती हैं।''

ओडिशा के विख्यात आलोचक, प्रो. दाशरथि दास ने मुख्य वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हुए पुस्तकों के प्रति अपने आशावादी विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि ''पुस्तकों का कोई अंत नहीं है, यदि पुस्तक का स्थान लेने का कार्य कोई कर सकता है तो यह केवल पुस्तक ही है।'' उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए 'ओडिशा साहित्य अकादमी' के पूर्व अध्यक्ष, महापात्र नीलमणि साहू ने गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों के प्रकाशन तथा पाठकों की वृद्धि पर अपने तर्क प्रस्तुत किए। उनका मत था कि ''कोई भी सभ्यता पुस्तकों के बिना समृद्ध नहीं होती, केवल उत्तम पुस्तकें ही हैं जो भविष्य में मानवता की रक्षा करेंगी।'' वहाँ उपस्थित सभी वक्ताओं ने एनबीटी द्वारा प्रकाशित अनेक श्रेष्ठ ओड़िया पुस्तकों तथा विभिन्न राज्यों में एनबीटी द्वारा बड़े पैमाने पर साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन करने पर अपनी खुशी व्यक्त की।

इस अवसर पर एनबीटी द्वारा हाल ही में प्रकाशित ओड़िया भाषा में साहित्यिक निबंधों के संग्रह, 'ओड़िया साहित्यचिंता' का लोकार्पण हुआ। इस मौके पर कटक के अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट, श्री लक्ष्मीधर महांति ने भी अपने विचार व्यक्त किए। यहाँ एनबीटी के 'ओड़िया सलाहकार समिति' के सदस्य तथा मेले के संयोजक, डॉ. विजयानंद सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया तथा 'ओडिशा प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ' के उपाध्यक्ष, श्री भिकारी चरण महापात्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एनबीटी तथा अन्य स्थानीय साहित्यिक संगठनों के तत्वावधान में मेले में हर शाम विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित हुए। 17 दिसंबर को एक पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें एनबीटी द्वारा हाल ही में प्रकाशित, लक्ष्मीकांत महापात्र की चयनित कहानियों के एक संकलन का लोकार्पण, ओडिशा के प्रख्यात कवि एवं आलोचक, प्रो. शरत चंद्र प्रधान ने किया। इस अवसर पर पुस्तक की संकलक, श्रीमती विजयिनी सिंह देव; 'झंकार' के संपादक, श्री सरोज रंजन महांति तथा विख्यात आलोचक एवं नाटककार, प्रो. विजय कुमार सत्पथी ने लक्ष्मीकांत की कहानियों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। 'उत्कल साहित्य समाज' के अध्यक्ष, प्रो. रत्नाकर चइनी ने बैठक की अध्यक्षता की।

18 दिसंबर को 'ओड़िया भाषा तथा साहित्य के विकास में साहित्यिक संगठनों की भूमिका' विषय पर विचार-गोष्ठी आयोजित की गई। इस अवसर पर 'उत्कल साहित्य समाज' के पूर्व अध्यक्ष, श्री अन्नदा प्रसाद रॉय ने बैठक की अध्यक्षता की। राज्य के साहित्यिक संगठनों के क्षेत्र की कुछ प्रख्यात हस्तियों जैसे 'उत्कल साहित्य समाज' के पूर्व अध्यक्ष, श्री अनादि साहू; 'ओडिशा साहित्य अकादमी' के पूर्व अध्यक्ष, डॉ. हुसैन रबी गाँधी; नाटककार एवं थियेटर कार्यकर्ता, डॉ. सुबोध पटनायक; प्रसिद्ध पत्रकार एवं साहित्यिक व सांस्कृतिक आयोजक, श्री अरुण पंडा तथा 'उत्कल साहित्य समाज' के महासचिव, डॉ. गोविंद चंद ने यहाँ आयोजित विचार-विमर्श में भाग लिया।

19 दिसंबर की शाम, अग्रणी महिला लेखिका, श्रीमती वीणापाणि महांति के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम को समर्पित थी। लेखिका द्वारा 'मेरा जीवन, मेरा साहित्य' पर एक संक्षिप्त बातचीत के पश्चात श्रोताओं के साथ पारस्परिक विचार-विमर्श किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि एवं अनुवादक, श्री अमरेश पटनायक ने की।

21 दिसंबर, मेले की सातवीं शाम को 'ओड़िया में विज्ञान लेखन : सीमाएँ एवं संभावनाएँ' विषय पर परिसंवाद आयोजित किया गया। इस अवसर पर 'वेन कोश्चन्स टू 50 इंटरेस्टिंग आनसर्स' के ओड़िया अनुवाद का लोकार्पण भी किया गया। ओड़िया के मशहूर विज्ञान-लेखक, प्रो. देबकांत मिश्रा ने बैठक की अध्यक्षता की। ओडिशा विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष, प्रो. बासुदेव कर; लोकार्पित पुस्तक के अनुवादक, प्रो. नित्यानंद स्वाइन; 'उत्कल सम्मिलानी' के अध्यक्ष, प्रो. गुरु प्रसाद महांति तथा विज्ञान लेखक एवं पत्रकार, डॉ. प्रमोद कुमार महापात्र ने 'वैज्ञानिक सोच का समकालीन विकास तथा ओड़िया विज्ञान लेखन का इतिहास : सीमाएँ एवं क्षेत्र' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

मेले की आठवीं शाम 'समकालीन ओड़िया बाल साहित्य : समस्याएँ एवं समाधान' विषय पर विचार-गोष्ठी को समर्पित थी। प्रो. महेश्वर महांति ने बैठक की अध्यक्षता की तथा श्रीमती मनोरमा महापात्र, श्री नादिया बेहारी महांति, प्रो. दीप्ती रंजन पटनायक और श्री मानस रंजन सामल जैसे प्रख्यात बाल साहित्यकारों तथा शोधकर्ताओं ने ओडिशी बाल साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

मेले की अंतिम शाम में 'अनुसृष्टि', अनुवाद संबंधी संगठन, द्वारा पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मेले के दौरान अन्य संगठनों जैसे 'उत्कल सम्मिलानी' तथा 'अभीप्सा' ने भी पुस्तक लोकार्पण तथा विचार-गोष्ठी जैसे कार्यक्रम आयोजित किए। मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए।

ओडिशा के विभिन्न क्षेत्रों तथा अन्य स्थानों के लगभग 80 प्रकाशकों ने इस मेले में भाग लिया।

एनबीटी के ओड़िया संपादक, डॉ. प्रमोद कुमार सर ने साहित्यिक कार्यक्रमों तथा मेले का समायोजन किया।

विजयवाड़ा में बाल-सृजनात्मकता का प्रोन्नयन

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा 1989 में आरंभ किए गए विजयवाड़ा पुस्तक समारोह के रजत जयंती वर्ष की शुरुआत सृजनात्मक साहित्य तथा चित्रकला पर आधारित दो-दिवसीय कार्यशाला के साथ हुई, जिसका आयोजन एनबीटी, इंडिया के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र (रा.बा.सा.कें.) द्वारा विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश) में 8-9 जनवरी, 2013 को किया गया। प्रख्यात लेखिका तथा बच्चों की सक्रिय कार्यकर्ता डॉ. एन. मंगादेवी द्वारा इस कार्यशाला का उद्घाटन किया गया।

बच्चों में पठन-प्रवृत्ति का विकास करने में नेशनल बुक ट्रस्ट के प्रयासों की सराहना करते हुए डॉ. मंगादेवी ने वंचित क्षेत्र के बच्चों के लिए परस्पर संवादात्मक तथा पठन-आनंद प्रदान करने वाली पुस्तकें सहज रूप से उपलब्ध करवाने पर विशेष बल दिया। इस अवसर पर तेलुगू की बच्चों की प्रख्यात लेखिका श्रीमती स्वाति श्रीपदा, गुजरात के विख्यात चित्रकार श्री सिद्धार्थ रामानुज तथा प्रसिद्ध लेखिका व आकाशवाणी विजयवाड़ा की स्टेशन निदेशक, श्रीमती एम. कृष्णा कुमारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। एनबीटी के तेलुगू सलाहकार समिति के सदस्य तथा प्रख्यात प्रकाशक श्री डी. अशोक कुमार ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की।

इस क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों से आए 40 चुनिंदा बच्चों ने इस कार्यशाला में भाग लिया, जिन्हें स्रोत व्यक्तियों द्वारा चित्रकला तथा लेखन-कौशल से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाई गई। इस कार्यशाला का संपूर्ण ब्योरा एनबीटी की मासिक द्विभाषी बाल-पत्रिका 'पाठक मंच बुलेटिन' के एक विशेष अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के संपादक, श्री मानस रंजन महापात्र तथा ट्रस्ट में तेलुगू के सहायक संपादक, डॉ. पी. मोहन ने इस कार्यशाला के विभिन्न सत्रों का समायोजन किया।

आंध्र प्रदेश में तीन कार्यक्रम

हैदराबाद : तेलुगू पुस्तकों का लोकार्पण समारोह

आंध्र सारस्वत परिषद, हैदराबाद व बाल साहित्य परिषद, हैदराबाद के सहयोग से एनबीटी ने 16 नवंबर, 2012 को एएसपी हॉल में एक पुस्तक लोकार्पण समारोह का आयोजन किया। समारोह में एनबीटी द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी की मूल पुस्तकों *दि लास्ट टिकट एंड अदर स्टोरीज* और *काबुलीवाला* के तेलुगू अनुवादों का लोकार्पण और उन पर परिचर्चा की गई तथा चित्रकला और निबंध प्रतियोगिताओं में विजयी बच्चों को पुरस्कार प्रदान किए गए। आंध्र प्रदेश राजभाषा समिति के अध्यक्ष श्री मंडली बुद्धाप्रसाद समारोह में मुख्य अतिथि थे जिन्होंने *दि लास्ट टिकट एंड अदर स्टोरीज* का लोकार्पण किया। आंध्र प्रदेश सरकार के सांस्कृतिक सलाहकार डॉ. केवी रमण, भाप्रसे (सेवानिवृत्त) ने समारोह की अध्यक्षता की और *काबुलीवाला* के तेलुगू अनुवाद का लोकार्पण किया।

बाल साहित्यकार एवं जानेमाने समीक्षक डॉ. वड्डेपल्लि कृष्ण तथा बाल साहित्य में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री रेड्डी राघवैया ने एनबीटी की अन्य पुस्तकों के साथ-साथ समारोह में लोकार्पित दोनों पुस्तकों पर चर्चा की। *लास्ट टिकट एंड अदर स्टोरीज* के अनुवादक श्री गोविंदराजू रामकृष्ण राव, बाल साहित्य परिषद के अध्यक्ष श्री सी.एच. वेंकटरमण, तेलुगू परामर्श पैनल सदस्य डॉ. जे बापूरेड्डी, भाप्रसे (सेवानिवृत्त) ने भी सभा में भाग लिया।

आरंभ में आंध्र प्रदेश सारस्वत परिषद के सचिव डॉ. जे चेन्नैया ने अपना स्वागत भाषण दिया और एनबीटी में तेलुगू भाषा संपादक डॉ. पथिपका मोहन ने ट्रस्ट तथा उसकी पुस्तकमालाओं और कार्यों का परिचय दिया।

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह कार्यक्रमों के एक भाग के रूप में 15 नवंबर, 2012 को हैदराबाद के विद्यानगर स्थित मदर्स स्कूल में बाल साहित्य परिषद के सहयोग से बच्चों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में लगभग 280 बच्चों ने भाग लिया।

भुवनगिरि, नालगोंडा : पुस्तक लोकार्पण

नालगोंडा जिले के भुवनगिरि स्थित एस.वी. कॉन्फेरेंस हॉल में 20 नवंबर को इनर ह्वील क्लब के सहयोग से एनबीटी ने एक पुस्तक लोकार्पण-सह-पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया। तेलुगू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित डॉ. एन. गोपी ने राष्ट्रीय जीवनचरित की पुस्तक *जोतिराव फुले* और *बड़ा मूर्ख कौन* का लोकार्पण किया और कहा कि साहित्य से संबंध खून के रिश्ते से बड़ा है और साहित्य समाज का उत्थान करता है।

सम्मानित अतिथि और भुवनगिरि की उप समाहर्ता, सुश्री दिव्या देवराजन, भाप्रसे ने कार्यक्रम का उद्घाटन और एनबीटी द्वारा हाल में प्रकाशित पुस्तक *पीऊ और उसकी दोस्त* के तेलुगू अनुवाद का लोकार्पण किया और पुस्तक पठन के प्रभाव पर चर्चा की। राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित तथा फिल्मी गीतकार श्री सुद्धला अशोक तेजा ने अपने गीत लेखन पर पुस्तकों के प्रभाव की चर्चा की।

श्री नोमुला सत्यनारायण, डॉ. तिरुनगरी रंगैया एफआरसीएस, कवि एवं समीक्षक डॉ. पी रंगैया और जानीमानी अनुवादक, लेखक श्रीमती स्वाति श्रीपदा ने पुस्तकों के महत्व और जीवन पर उनके प्रभाव पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में *बड़ा मूर्ख कौन* के अनुवादक डॉ. अब्दुल ग़नी ने भी भाग लिया।

आरंभ में एनबीटी के तेलुगू भाषा संपादक डॉ. पथिपका मोहन ने ट्रस्ट के कार्यों का परिचय दिया। इनर ह्वील क्लब की अध्यक्ष सुश्री बंडारु जयश्री ने स्वागत भाषण दिया। इनर ह्वील क्लब की सचिव सुश्री मल्लिका रानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

राजामूंद्री पुस्तक मेला : पुस्तकों का लोकार्पण

सुब्रह्मण्य मैदान में आयोजित राजामूंद्री पुस्तक मेले में 24 नवंबर, 2012 को पोट्टिश्रीरामु तेलुगू विश्वविद्यालय के साहित्यपीठम के सहयोग से एनबीटी ने सद्यःप्रकाशित और डॉ. वेदगिरि रामबाबू द्वारा संपादित तेलुगू के मूल कथा संग्रह *श्रीपाद सुब्रह्मण्यम शास्त्री उत्तम कथालु* के

लोकार्पण कार्यक्रम और परिचर्चा का आयोजन किया। साहित्यपीठम के डीन आचार्य येंडलुरि सुधाकर ने एनबीटी द्वारा सद्यःप्रकाशित पुस्तक *पाँच दोस्त* के तेलुगू अनुवाद का लोकार्पण किया। हैदराबाद के साहित्य अकादेमी तेलुगू सलाहकार बोर्ड के संयोजक और समीक्षक तथा लेखक डॉ. पोरांकी दक्षिणामूर्ति ने *श्रीपाद सुब्रह्मण्यम शास्त्री उत्तम कथालु* का लोकार्पण किया।

मुख्य अतिथियों डॉ. पोतुकूची सूर्यनारायण मूर्ति और राजामूंद्री के समीक्षक तथा लेखक श्री कोडुरि श्री रामामूर्ति ने पुस्तक के लेखक के जीवन की अलिखित घटनाओं पर प्रकाश डाला और उनके जीवन तथा समाज सुधार कार्यों का मूल्यांकन किया। डॉ. वसा प्रभावती और समीक्षकों तथा लेखकों ने लेखक की कथाओं में नारी चरित्रों और उनके लेखन में सामाजिक संदर्भ पर अपने-अपने व्याख्यान दिए। जानेमाने कथा लेखक और समीक्षक डॉ. कालुवा मल्लैया ने श्रीपाद की कहानियों में दलित पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। प्रसिद्ध अधिवक्ता, समीक्षक और वरिष्ठ पत्रकार श्री पोतुकुचि सूर्यनारायण मूर्ति भी मंच पर उपस्थित थे।

आरंभ में डॉ. पथिपका मोहन ने स्वागत भाषण दिया। श्री पेरिशेट्टी श्रीनिवास राव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अलमारी में रखी किताब बेकार हथियार की तरह है। धन की तरह किताबें भी सतत प्रवहमान होनी चाहिए। किताब और धन अधिक-से-अधिक उधार लिये और दिए जाएँ। एक किताब न केवल मित्र होती है, यह आपके लिए मित्र भी बनाती है। जब आपके मन और मानस में एक किताब होती है आप धनवान होते हैं। लेकिन जब आप इसे अन्यों को देते हैं तो आप तीन गुना अधिक धनवान होते हैं। *—हेनरी मिलर*

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नवीनतम प्रकाशन

1857 का महान विद्रोह और मौलवी अहमद उल्लाह शाह

रश्मि कुमारी पृ. 82 ` 55

1857 के विद्रोह के गुमनाम नायकों में से एक मौलवी अहमद उल्लाह शाह के जीवन-संघर्ष का प्रामाणिक दस्तावेज है यह पुस्तक। मौलवी साहब अवध इलाके में 'इंकलाब के प्रकाश-पुंज' के नाम से विख्यात थे।

ISBN 978-81-237-6652-2

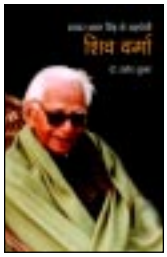

सरदार भगत सिंह के सहयोगी शिव वर्मा

प्रो. प्रमोद कुमार पृ. 156 ` 95

मशहूर क्रांतिकारी, लेखक और समाजवादी विचारक शिव वर्मा (1904-1997) की जीवनी मात्र नहीं, वरन क्रांतिकारियों द्वारा देश की स्वतंत्रता के लिए किए गए त्याग और विचारों का दस्तावेज भी है यह पुस्तक।

ISBN 978-81-237-6660-7

आदिवासी दुनिया

हरिराम मीणा पृ. 280 ` 125

यह पुस्तक भारतीय आदिवासी परंपरा, मिथक, देश के स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासियों का योगदान, आदिवासी संस्कृति, धर्म, भाषा-शिक्षा आदि से जुड़े ज्वलंत विषयों आदि पर गंभीरता से विमर्श करती है।

ISBN 978-81-237-6672-0

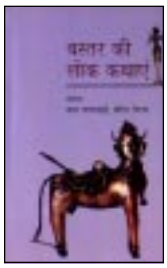

बस्तर की लोक कथाएँ

लाला जगदलपुरी, हरिहर वैष्णव पृ. 162 ` 85

बस्तर के जन-जीवन की सरलता, निश्छलता और लोक परंपराओं आदि को उकेरते बस्तर की नौ लोकभाषाओं की लोक कथाओं को इस संकलन में प्रस्तुत किया गया है।

ISBN 978-81-237-6673-7

भारतीय आदिवासी जीवन

निर्मल कुमार बोस; अनु. : श्याम परमार पृ. 92 ` 75

1976 में पहली बार प्रकाशित इस पुस्तक में गाँधीवादी लेखक, चिंतक ने अलग-अलग बसी हुई भारतीय आदिवासी जनजातियों के जन-जीवन पर प्रकाश डाला है।

ISBN 978-81-237-6676-8

कुसुम अंसल : संकलित कहानियाँ पृ. 254 ` 110

कुसुम अंसल की प्रस्तुत 28 कहानियों में महज वक्त की परछाईं ही नहीं, वरन सतत संघर्ष का अक्स भी दिखता है। इन कहानियों के पात्र हमारे आस-पास और परिवेश के ही हैं और कथा की भाषा भी आम जीवन से ली गई है।

ISBN 978-81-237-6661-4

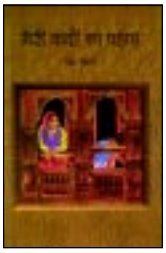

मेरी यादों का पहाड़

देवेंद्र मेवाड़ी पृ. 300 ` 140

एक अनूठी पुस्तक, जिसे पढ़ते-पढ़ते पाठक अनायास ही पहाड़ की गहरी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ जाता है। पुस्तक में संस्मरण, कथा-कहानी, किस्सागोई, यात्रा-वृत्तांत, शिकार कथा, लोकगीत, लोकगाथा—सब कुछ है।

ISBN 978-81-237-6665-2

सूर्यबाला : संकलित कहानियाँ पृ. 202 ` 95

15 कहानियों के इस संकलन में मध्यवर्गीय जीवन के अनुभवों की जटिल स्थितियाँ अपनी चुनौतियों के साथ परिलक्षित होती हैं।

ISBN 978-81-237-6573-0

रामविलास शर्मा : संकलित निबंध

संकलन : अजय तिवारी पृ. 482 ` 195

प्रस्तुत संकलन में विद्वान निबंधकार, आलोचक, विचारक एवं कवि के सांस्कृतिक इतिहास लेखन के क्षेत्र में अभूतपूर्व अवदान की झलक मिलती है।

ISBN 978-81-237-6656-0

घरेलू पीड़क जंतु एवं उनका नियंत्रण

रेणुका गुप्ता; अनु. : आशुतोष गर्ग पृ. 104 ` 65

यह पुस्तक सरल एवं बोधगम्य भाषा में सामान्य घरेलू जंतुओं तथा उनको पहचानने एवं उन्हें घरेलू स्तर पर ही नियंत्रित करने के विषय में जानकारी देती है।

ISBN 978-81-237-6645-4

मेरा पहला हवाई सफर

परिकल्पना–शब्द : पंकज चतुर्वेदी

चित्र : इरशाद कप्तान पृ. 24 ` 30

हवाई यात्रा की शुरुआत से लेकर हवाई जहाज के जमीन पर उतरने तक किन-किन प्रक्रियाओं से गुजरा जाता है उसका संक्षिप्त किंतु रोचक विवरण।

ISBN 978-81-237-6695-9

मेट्रो का मजा

पंकज चतुर्वेदी; चित्र : रत्नाकर सिंह पृ. 16 ` 25

दिल्ली और कोलकाता सरीखे महानगरों में मेट्रो ट्रेन चलती है। मेट्रो में चढ़ने के लिए टोकन लेना पड़ता है। मेट्रो में महिलाओं के बैठने के लिए अलग कोच की व्यवस्था है। मेट्रो में सवारी करने का अपना ही मजा है। रोचक ढंग से यह सब लिखा है पुस्तक में।

ISBN 978-81-237-6702-4

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 : छायाचित्र वीथिका

पुस्तक समीक्षा

स्वाधीनता का स्त्री-पक्ष (स्त्री-विमर्श)
अनामिका; पृ. 196 ` 400
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-02
हिंसा और आतंक के इस समय में स्त्रियाँ सर्वाधिक निशाने पर हैं। ऊँचे-ऊँचे सत्ता प्रतिष्ठान तक पहुँचने के बावजूद उनकी 'अबला' छवि को पूर्णतः तोड़ा नहीं जा सका है। उधर, पूँजी और बाजार ने भी स्त्री को पददलित करने में कमी नहीं छोड़ी। एक समय-सजग चिंतन है इसमें।

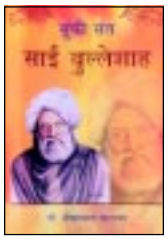

सूफ़ी संत साईं बुल्लेशाह
डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत
पृ. 200 ` 300
सूफ़ी संत मलिक मुहम्मद जायसी
डॉ. सुशील कुमार फुल्ल
पृ. 176 ` 300
इंद्रप्रस्थ इंटरनेशनल, 18-बी, साऊथ अनारकली, दिल्ली-51

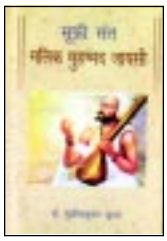

सूफ़ी संत साईं बुल्लेशाह एवं मलिक मुहम्मद जायसी के जीवन एवं वाणी को संजोया गया है।

एक किरण सौ झाँइयाँ (उपन्यास)
आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री; ` 95
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
आचार्य शास्त्री का एक प्रयोगधर्मी उपन्यास, जिसे वह उपन्यास न कहकर 'प्राचीन कथा-आख्यायिका की परंपरा में एक नया प्रयास' मानते हैं।

ब्याहता (कहानी संग्रह)
डॉ. प्रेमा खुल्लर
बसंती प्रकाशन, पी-137, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23
सात कहानियाँ, और सभी कहानियों में स्त्री पात्र सजग, चिंतनशील और सक्रिय है। पारिवारिक सदस्यों के बीच संबंधों की संवेदनात्मकता की परतें खुलती दिखाई पड़ती है।

मैंने तुम्हारी मृत्यु को देखा है (कविता संग्रह)
सुरेन्द्र बोथरा 'मनु'
पृ. 112 ` 150
सर्जना, शिवबाड़ी रोड, बीकानेर-334003, राजस्थान
अपने जीवनानुभवों की सघन अभिव्यक्ति की है कवि ने। भाव और भाषा में ऐक्य और समन्वय इस संग्रह की विशेषता है।

रेखाओं के बीच (लेख)
माता प्रसाद शुक्ल; पृ. 104 ` 120
पराग बुक्स, ई-28, लाजपत नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद-201005
व्यंग्यपरक लेखों का संग्रह है यह पुस्तक, जिसमें अपने समय और परिवेश की घटनाएँ झलकती हैं। घटनाओं का भूगोल मुख्यतः मध्य प्रदेश है।

चलती चाकी (उपन्यास)
सूर्यनाथ सिंह; पृ. 256 ` 395
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
सुरक्षा के नाम पर पूरे विश्व में पुलिस और सुरक्षा बालों को मिले अधिकारों का उपयोग कम और दुरुपयोग अधिक हो रहा है। श्वेतानंद के बहाने उपन्यासकार ने इसी बिंदु से प्रस्थान किया है। ज्वलंत और पठनीय कथा।

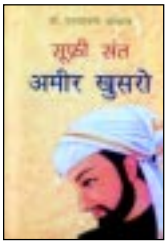

सूफ़ी संत अमीर खुसरो
डॉ. परमानन्द पांचाल
पृ. 192 ` 300
संत कवि गुरु अंगददेव
डॉ. मनमोहन सहगल
पृ. 192 ` 300
इंद्रप्रस्थ इंटरनेशनल, 18-बी, साऊथ अनारकली, दिल्ली-51

सूफ़ी संत अमीर खुसरो एवं संत कवि गुरु अंगददेव के जीवन एवं वाणी को संजोया गया है।

एक और नीमसार (संगतिन आत्ममंथन और आंदोलन)
ऋचा नागर, ऋचा सिंह; पृ. 168 ` 250
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-02
उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में सक्रिय पाँच हजार दलित और गरीब महिलाओं, मजदूरों और किसानों के संगठन–संगतिन किसान मजदूर संगठन–के जीवंत आंदोलन का दस्तावेज।

बूंद-बूंद रिसती ज़िन्दगी (आत्मकथा)
परगट सिंह सिद्धू; पृ. 84 ` 125
आधारशिला प्रकाशन, बड़ी मुखानी, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखंड) 263139
पंजाबी की चर्चित आत्मकथा पुस्तक का हिंदी अनुवाद। लेखक ने बड़ी ही सहजता और खुलेपन के साथ अपनी जिंदगीनामा को पाठकों के सामने पेश किया है।

ढाई आख़र प्रेम के (कहानी संग्रह)
रश्मि मल्होत्रा; पृ. 128 ` 200
श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग, साऊथ गांवड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली-53
जिस गहराई से अनुभूतियों को जीती हैं कथाकार उसी गहराई से सिरजती भी हैं। पाठक इन कहानियों को पढ़कर इनमें वर्णित कथानक को अपने जीवन से सीधा जुड़ा हुआ पाता है।

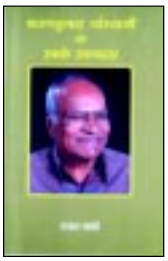

श्रवणकुमार गोस्वामी और उनके उपन्यास (आलोचना)
रतन वर्मा; पृ. 168 ` 300
रचनाकार प्रकाशन, 1586/1ई, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
महानगर की चकाचौंध से दूर रहकर लेखन करने वाले कस्बाई रचनाकार श्री गोस्वामी के उपन्यासों पर केंद्रित एक आलोचनात्मक पुस्तक, जिसमें उनका व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों झलकता है।

ट्रस्ट की पुस्तक 'औषधीय पौधे' की विज्ञान प्रगति में प्रकाशित समीक्षा

भारत में पेड़-पौधों द्वारा विभिन्न रोगों एवं बीमारियों का उपचार अनादि काल से होता आ रहा है और अनेक ऋषि-मुनियों से लेकर आधुनिक वैज्ञानिकों तक ने संस्कृत तथा अँग्रेजी भाषाओं में इस विषय पर अनेक ग्रंथ तथा पुस्तकें लिखी हैं। लेकिन सामान्यजन को संस्कृत तथा अँग्रेजी भाषा के ज्ञानाभाव के कारण ये ग्रंथ तथा पुस्तकें उनकी पहुँच एवं समझ से परे रही हैं। स्थानीय औषधीय पौधों के गुणधर्मों का लाभ सामान्यजन को मिल सके, इस आशय से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने 'भारत–देश तथा लोग' शृंखला के तहत सन् 1967 में प्रख्यात वनस्पतिज्ञ डॉ. सुधांशु कुमार जैन से साधारण हिंदी भाषा में 'औषधीय पौधे' शीर्षक के तहत पुस्तक लिखने का आग्रह किया था। डॉ. जैन इस विषय के मूर्धन्य ज्ञाता रहे हैं। उक्त विषय पर डॉ. जैन द्वारा लिखित पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् 1968 में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक की कम कीमत तथा श्रेष्ठ विषय-वस्तु के कारण यह आम जनता, विद्यार्थियों, वैद्यों, शिक्षकों आदि में इतनी लोकप्रिय हुई कि इसकी हजारों प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक गईं। इस पुस्तक की लोकप्रियता तथा प्रांतीय भाषाओं में अनुवाद की माँग को देखते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया को इसका दस से ज्यादा विभिन्न प्रांतीय भाषाओं जैसे बांग्ला, गुजराती, पंजाबी, मराठी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़ आदि तथा अँग्रेजी में अनुवाद कराना पड़ा। औषधीय पौधे पुस्तक का प्रथम संस्करण 1968 में, द्वितीय 1975 में, तृतीय 1987 में तथा चतुर्थ 1994 में प्रकाशित हुआ। सन् 2010 में डॉ. जैन ने समय की माँग के अनुसार कुछ और महत्वपूर्ण औषधीय पौधों को सम्मिलित करने की आवश्यकता महसूस की और इस प्रकार इस नवीन संस्करण 2011 का प्रादुर्भाव हुआ।

प्रस्तुत पुस्तक में 92 अध्यायों में 120 पौधों की यथासंभव केवल विस्तृत सूत्रों पर आधारित सामग्री दी गई है। पूर्व संस्करण में केवल 84 पौधों का विवरण दिया गया था। नवीन संस्करण में जो प्रमुख पौधे सम्मिलित किए गए हैं उनमें हल्दी, सफेद मूसली, सतावर, घीक्वार, काली मूसली, गुंची, गूगल तथा चित्रक आदि प्रमुख हैं जो आयुर्वेदिक औषधियों के अतिरिक्त आधुनिक दवाओं तथा सौंदर्य प्रसाधनों में भी प्रयुक्त हो रहे हैं। इस पुस्तक में कुल 242 पृष्ठ हैं जिनमें प्रथम 20 पृष्ठों में शीर्षक, प्रकाशक, सावधानी, विषय-सूची, चित्र सूची, निवेदन तथा विषय-प्रवेश दिया गया है तथा शेष पृष्ठों में पौधों के गुणधर्म सहित विस्तृत विवरण जैसे हिंदी नाम, कोष्ठक में अँग्रेजी नाम (उपलब्धता के आधार पर), औषधीय गुण, शोध परीक्षण तथा अन्य सूचना, वैज्ञानिक (लैटिन) नाम, कुल तथा अमुक पौधे का विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में नाम जैसे कश्मीरी, ओड़िया, कन्नड़, तमिल, मराठी, मलयालम, तेलुगू, गुजराती, बंगला, संस्कृत इत्यादि (उपलब्धता के आधार पर) दिए गए हैं। उसके बाद पौधे का वर्णन, प्राप्ति स्थान तथा अन्य मिलती-जुलती जातियों का वर्णन दिया गया है। प्रत्येक पौधे का वर्णन तथा विषव-वस्तु को अत्यंत साधारण बोल-चाल की भाषा में प्रस्तुत किया गया है जिससे पाठकों को समझने में कोई कठिनाई न हो। पुस्तक में 49 पौधों के 56 रंगीन चित्र तथा 56 पौधों के रेखाचित्र दिए गए हैं जिससे पाठकों को पौधा पहचानने में असुविधा न हो। अंत में कुछ उपयोगी साहित्य एवं संदर्भ व वैज्ञानिक तथा अँग्रेजी नामों की रोमन लिपि में सूची दी गई है।

निस्संदेह डॉ. जैन द्वारा संशोधित, 'औषधीय पौधे' पुस्तक का नवीन संस्करण सभी पाठकों, विद्यार्थियों, जन-साधारण, शोधार्थियों, वैद्यों, शिक्षकों आदि के लिए अत्यधिक उपयोगी साबित होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया बधाई का पात्र है।

समीक्षक : डॉ. रामलखन सिंह सिकरवार, आरोग्यधाम, दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट, जिला सतना-485331 (म.प्र.)

तमिल लेखक का ट्रस्ट-मुख्यालय में सम्मान

हाल ही में तमिल भाषा के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात तमिल लेखक **श्री डी. सेल्वाराज** को नेशनल बुक ट्रस्ट के दिल्ली स्थित मुख्यालय में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने शाल ओढ़ाकर एवं पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया।

ट्रस्टकर्मी सेवानिवृत्त

ट्रस्ट में 40 सालों से अधिक सेवा-अवधि के उपरांत **श्री अनिल कुमार खन्ना** सहायक निदेशक (प्रदर्शनी) के पद से सेवानिवृत्त हो गए। 28 फरवरी, 2013 को ट्रस्ट के सहकर्मियों ने उन्हें दिल्ली स्थित मुख्यालय-सभागार में एक समारोह में भावभीनी विदाई दी। विदित हो कि श्री खन्ना ने 1972 में ट्रस्ट में सेवारंभ किया था। उन्होंने समय-समय पर ट्रस्ट के अनेक विभागों में अपनी सेवाएँ दीं। ट्रस्ट के उनके समस्त सहयोगी उनके उज्ज्वल भविष्य एवं दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

पाठक मंच बुलेटिन
बच्चों की द्विभाषी पत्रिका
वार्षिक शुल्क : ` 50.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

शुभकामना संदेश

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 के अवसर पर

डॉ. एम.एम. पल्लम राजू, मंत्री, मानव संसाधन विकास, भारत सरकार
वार्षिक न.दि.वि.पु.मे. आज एफ्रो-एशियाई क्षेत्र में सबसे बड़ा पुस्तक मेला है, जो प्रकाशकों, लेखकों व पाठकों के लिए एक ऐसा मंच प्रदान करता है, जहाँ वे एकजुट होकर आ सकें। मेरे विचार से यह पुस्तक मेला प्रकाशकों को उनकी पुस्तकों के प्रोन्नयन का सुअवसर प्रदान करता है।

डॉ. शशि थरूर, राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास, भारत सरकार
यह (पुस्तक मेला) ज्ञान के लिए आवश्यक साधन सुलभ कराता है और कथा साहित्य तथा कथेतर साहित्य सहित सभी प्रकार के विषयों के बारे में सूचना प्रदान करता है। बहु-सांस्कृतिक तथा बहु-भाषी भारत में ऐसे महत्ता वाले पुस्तक मेले, हमारे देश के जनतांत्रिक, उदारवादी, प्रगतिशील एवं धर्म-निरपेक्ष स्वरूप को दर्शाते हैं।

जितिन प्रसाद, राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास, भारत सरकार
इसने (नेशनल बुक ट्रस्ट) पिछले 40 वर्षों में, विशेष रूप से युवाओं तथा बच्चों के बीच पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

तेजेंद्र खन्ना, उपराज्यपाल, दिल्ली
यह मेला वैश्विक स्तर पर पाठकों को पुस्तकों की दुनिया का व्यापक अनुभव करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगा।

ए. सेतुमाधवन, अध्यक्ष, ने.बु.ट्र.
यह (विश्व पुस्तक मेला) हमारी भाषायी विविधता की एक झलक प्रस्तुत करता है और हमारे प्रकाशन उद्योग की शक्ति को दर्शाता है।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/03/2013

चिट्ठीघर

देश-विदेश की साहित्यिक गतिविधियों को 'गागर में सागर' की तरह परोसता है आपका यह **संवाद**। **डॉ. बहादुर मिश्र,** भागलपुर, बिहार

ने.बु.ट्र. संवाद से नियिमत रूप से जुड़ने की इच्छा है। कृपया नाम सूची में मेरा नाम-पता दर्ज कर लें।

अर्जुन सिंह राजपूत, मंगोली, नैनीताल, उत्तराखंड

आपका पता सूची में दर्ज कर लिया गया है। **–संपा.**

राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुस्तकीय/साहित्यिक गतिविधियों से अवगत कराता है **संवाद**। अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेलों में पुस्तकों के माध्यम से भारतीय सभ्यता-संस्कृति को विदेशों में पहुँचाने में मदद मिलती है। पुस्तकोन्नयन में भी मददगार है यह पत्र। विश्व पुस्तक मेला पर रिपोर्ट जानकारीपरक थी। **प्रो. शामलाल कौशल,** रोहतक, हरियाणा

विभिन्न स्थानों पर आयोजित पुस्तक मेला की रपट उत्साहवर्धक है। नवीनतम प्रकाशनों की सूचना देकर आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। शब्द की सत्ता को बचाने का सबसे बड़ा उपक्रम कर रहे हैं साहित्यकार और आप इसके वाहक हैं। आपका संपादन उत्कृष्ट है।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

सीमित पृष्ठों में सूचनाओं की भरमार, **संवाद** की इसीलिए है लोकप्रियता अपार। पुस्तकीय संस्कृति के प्रसार का आपका काम, चलता रहे यूँ ही अविराम। आपका अभियान, पाए मान। अच्छी पुस्तकें खूब छपें, बिकें और पढ़ी जाएँ, समर्पित हैं मेरी शुभकामनाएँ।

प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

पुस्तकें हमें जन-जीवन से जोड़ती हैं और हमें सदैव तरोताजा रखती हैं। निःसंदेह, पुस्तकों का पठन सभी के लिए लाभकारी है। पुस्तकों से बड़ा कोई मित्र नहीं है। इस विचार को प्रमुखता से **संवाद** हम तक पहुँचा रहा है। **संवाद** के अंक हमें पुस्तकों की दुनिया से रू-ब-रू कराते हैं। आपकी इस पहल के लिए जितनी तारीफ की जाए, कम है।

गजानन पाण्डेय, काचीगुडा, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

निरंतर साहित्यिक समाचार उपलब्ध कराने हेतु धन्यवाद!

डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद पत्रिका के स्वामित्व संबंधी घोषणा

प्रपत्र IV

(कृपया नियम-8 देखें)

प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	सतीश कुमार
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
संपादक	:	बलदेव सिंह 'बद्दन'
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
समाचार-पत्र पर स्वामित्व रखने वाले व्यक्ति और साझीदार अथवा पूरी पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयरधारियों के नाम एवं पते	:	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

मैं, सतीश कुमार, एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

सतीश कुमार
(प्रकाशक का हस्ताक्षर)

दिनांक : 01 मार्च, 2013

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070